

What is Arya Samaj?

Arya Samaj, founded by Maharshi Dayanand Saraswati, is an institution based on the Vedas for the welfare of universe. It propagates universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 37

10/2015-16

MONTHLY

April 2015

Dates for your diary

(Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)

- **Arya Samaj Foundation Day**
Sunday 12th April - 11am - 1pm
- **Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together)**
Saturday 30th May 2015. Register NOW for a place! (See pages 18, 19 for detailed information and enclosed application form)

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)

188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA

TEL: 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

Hall Hire Advert		3
O Soul! Arise	Krishan Chopra	4
अध्यात्म के शिखर पर-१९	आचार्य डॉ. उमेश यादव	6
Cost for our services		8
छठा सँस्कार- निष्क्रमण सँस्कार	आचार्य डॉ. उमेश यादव	9
The 10 Principles of Arya Samaj		12
सातवाँ सँस्कार- अन्नप्राशन सँस्कार	आचार्य डॉ. उमेश यादव	13
Matrimonial Advert		16
Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)		17
Vedic Vivah Mela (Matrimonial Get Together) 2015		18
Vichar Gyan Pravah		20
List of Festivals for Year 2015		21
News (पारिवारिक समाचार)		22

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm. Bank Holidays – Closed
Tel. 0121 359 7727 E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Arya Samaj (West Midlands)

Hall Hire

Perfect venue for –

- **Engagements**
- **Religious Ceremonies**
- **Community events**
- **Family parties**
- **Meetings**

Venue information –

- **£300 for 6 hours (min.)**
 - **£50 Hourly**
- **Main Hall with Stage**
 - **Dining hall**
 - **Kitchen**
 - **Cleaning**
- **Small meeting room**
- **Vegetarian ONLY**
 - **NO Alcohol**
 - **Free parking**

**For more information call us on
0121 359 7727**

**Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm Bank Holidays – Closed**

O Soul! Arise

By Krishan Chopra

सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद । भासान्तरिक्षमापृण
ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिशऽउद् दृह ॥ यजुर्वेद १७.७२

Suparnoasi marutmaan prishthe prithvyaaah seed bhaasaant
rikshamaaprina ।
Jyotiyaa divamuttabhaan tejasaa disha ud drmha ॥ Yajur
17.72

Meaning in Text Order

Suparna = progressive
Gurutmaan = elevated soul
Prishthe = sutrface
Prithivyaa = earth
Seeda = sit
Bhaasaa = with radiance
Antriksham = space
Aaprin = fill
Jyotishaa = with your light
Divam = planetary region
Utabhaan = brighten up
Tejasaa = with illumination
Dishah = all quarters
Udadrinha = elevate.

Meaning

O soul! You are endowed with excellent qualities, yoked with power just as sun shines in the planetary region. You are keen to progress in all directions finally leading to godliness

Contemplation

O soul! You don't understand your full potential, you are a progressive, elevated and full of high ambitions. You are here for advancement... You have divine qualities if you are able to understand and properly utilize them. You are eminent, exalted, distinguished. You rise and shine on the surface of earth and with your radiance brighten the world. You belong to the entire world.

When you will show your mental luster then with your glow the entire mental world will illuminate with your beaming. You rise up more and with your meridian and raise the planetary region. This planetary system is shining and that luster is present in you. You shine the light of your soul. Radiate your divine light. And lift the all quarters of the universe with your radiance.

Your glow should spread in all directions and it should take others with it and make determined and uplift them. Why are you sitting like an ordinary people? You are that type of fire which inspires in the whole world with its own dazzle. Rise! You have highest qualities; you are full of self confidence.

अध्यात्म के शिखर पर-१९

आचार्य डॉ. उमेश यादव

ईश्वर और जीव में भेद-पहचान:-

१. अनेनात्मना जीवेनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि ।-

छान्दोग्योपनिषद्६.३.२

२. तसृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्ऐत्तिरीय ब्राह्मण-अनु.६

यहाँ इन दोनों प्रमाणों में “अनुप्रवेश” भाव दिखाया गया है । यह एक कहने की शैली है । अगर हम इस शब्द का सही अर्थ समझ लें तो ईश्वर और जीव का भेद भी समझ सकेंगे । यहाँ प्रश्न उठाया गया है कि प्रथम प्रमाण में ईश्वर कहता है कि मैं जगत् और शरीर को रचकर जगत् में व्यापक और शरीर में जीव रूप होकर नाम और रूप की व्याख्या करूँ । इसी प्रकार दूसरे प्रमाण में कहा गया कि परमेश्वर ने उस जगत् और शरीर को बनाकर उसमें यही प्रविष्ट हुआ । इन दोनों प्रमाणों का ऐसा अर्थ करने वाले ईश्वर और जीव को एक ही मानते हैं ।

महर्षि दयानन्द स.प्र.-स. समुल्लास में इसका उत्तर इस प्रकार स्पष्ट कर रहे हैं-“ जो तुम पद, पदार्थ और वाक्यार्थ जानते तो ऐसा अनर्थ कभी न करते । क्योंकि यहाँ एक प्रवेश और दूसरा अनुप्रवेश भाव दिखाया गया है । अनुप्रवेश अर्थात् पश्चात् प्रवेश (प्रवेश के बाद दूसरा प्रवेश)” -हमें इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये । उन्होंने आगे समझाया-“ परमेश्वर शरीर में प्रविष्ट हुये जीवों के साथ अनुप्रविष्ट के समान होकर वेद द्वारा सब नाम रूप आदि की विद्या को प्रकट करता है और शरीर में जीव को प्रविष्ट करा आप जीव के भीतर अनुप्रविष्ट हो रहा है ।” वे फिर लिखते हैं

कि जो तुम “अनु” शब्द का अर्थ जानते तो वैसा विपरीत अर्थ कभी न करते ।”-स.प्र. ७वाँ समुल्लास

यहाँ पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि ईश्वर और जीव दोनों पृथक्पृथक् तत्त्व हैं । ईश्वर जीव के लिये शरीर की व्यवस्था करता है और जीवों के भोग के लिये सृष्टि अर्थात् जगत् की रचना करता है । जैसे जगत् की रचना कर ईश्वर जगत् के कण-कण में समा रहा है वैसे ही वह सब जीवों में भी प्रविष्ट है । महर्षि दयानन्द ने कितना स्पष्ट किया कि ईश्वर जीव को शरीर में प्रविष्ट कराता है और स्वयं सर्वव्यापक-भाव से जीव में भी प्रविष्ट हो जाता है । यही उसका अनुप्रवेश है । इसको और सरल रूप से समझें तो यों समझें कि परमात्मा जीव को पहले शरीर में प्रवेश कराता है; यह उसका अपना कर्म है फिर वह जीव में प्रवेश होता है; यह उसका सर्वव्यापकत्व-भाव है । इससे सीधा स्पष्ट हो रहा है कि ईश्वर अलग सत्ता है और जीव अलग । ईश्वर जीव नहीं हो सकता और जीवात्मा कभी ईश्वर/परमात्मा नहीं बन सकता । हाँ, ईश्वर सर्वज्ञ है और जीव स्वभाव से अल्पज्ञ पर दोनों चेतन हैं । ईश्वर कण-कण में होता हुआ सर्वदेशी है पर जीव शरीर में रहकर एक देशी है । हाँ, चेतनता, नित्यता आदि की दृष्टि से वे दोनों अद्वैत भाव रखते हैं । अद्वैत का अर्थ है द्वित्व नहीं अपितु एकत्व । अतः दोनों चेतनता व नित्यता भाव से एकत्व भाव रखते हैं पर दोनों अपनी-अपनी सत्ता में एक नहीं हैं अपितु दो अलग-अलग सत्तायें हैं । हमें यह स्पष्ट समझना होगा कि दोनों सत्ताओं में कई गुण-कर्म-स्वाभाव एक जैसे हैं, इस कारण उन्हें आँशिक अद्वैत भी कहा जा सकता है पर दोनों पूर्ण सत्ता में सर्वथा पृथक् हैं । एक में पूर्णता है तो दूसरे में अल्पता । यही दोनों में मौलिक भेद है चाहे वह ज्ञान से हो या अन्य कोई गुण-कर्म-स्वभावों से ।

Cost for our services

- Ordinary membership for Arya Samaj - £20 for 12 months.
- Hire of our hall £300 for 6 hours & there after £50 hourly.
- Matrimonial service - £90 for 12 months.
- Marriage Ceremony performed by our priest - £400.
- Havan performed at home by our priest will be £51.

छठा सँस्कार- निष्क्रमण सँस्कार

आचार्य डॉ. उमेश यादव

यह सँस्कार जन्म के तीसरे शुक्ल पक्ष की तृतीया या चौथे मास में जिस दिन को उसका जन्म हुआ है; उस तिथि में अथवा जब मन को अच्छा समय प्रतीत हो तभी करना उचित है। उस दिन घर से बाहर वहाँ ले जायें, जहाँ का वायु और स्थान शुद्ध हो; जहाँ भ्रमण करना स्वास्थ्य के लिये सर्वोत्तम हो।

निष्क्रमण का अर्थ होता है -बाहर जाना अर्थात् घर से बाहर जाना। स्वस्थ शरीर व मन के समुचित विकास के लिये शुद्ध वायु तथा प्रकाश उत्तम है। घर की हवा बन्द होने से वह अपेक्षाकृत कम स्वास्थ्य वर्द्धक है। अतः निष्क्रमण सँस्कार के बाद प्रतिदिन वच्चे को अगर थोड़ी देर के लिये खुली हवा तथा प्रकाश में रखें तो निश्चितरूप से उसके स्वास्थ्य में उत्तमता आयेगी। शरीर पुष्ट होकर जलवायु के अनुकूल बनेगा, साथ ही रोगाणुओं से लड़ने की ताकत शरीर में अधिकाधिक बढ़ेगी। इससे दीर्घायुष्य प्राप्त होगा। अतः जब दिन खुला सामान्य तापमान व प्रकाश से युक्त हो तब हमें इस कार्य के लिये समय का लाभ ले लेना यथोचित होगा। यजुर्वेद २६/१५ में ठीक ही कहा है- “ उपहवरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रोऽजायत”। पर्वतों के गुफाओं में तथा नदियों के संगम पर ऋषि-मुनि साधना किया करते हैं जो आज भी यह सार्थक है क्योंकि इन स्थानों पर प्रायः हवा शुद्ध व शीतल होती है। इस कारण निष्क्रमण हेतु घर से दूर किसी वनस्थ आश्रम, वाग, यज्ञशाला आदि शुद्ध स्थान को चुनना श्रेयस्कर होगा।

विधिगत विचार- प्रातः काल निष्क्रमण सँस्कार घर में अथवा यज्ञशाला में विधिवत् करके ही वच्चे को घर से बाहर ले जायें ताकि वच्चे का मन प्रारम्भ से ही सँस्कारित रहे और माता-पिता भी मन से प्रसन्न रहें। साथ में माता-पिता के अलावे परिवारगत कोई अन्य सदस्य या मित्र गण का होना भी सम्भावित है।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्यों को भी समझना आवश्यक है ।

१. शुक्ल पक्ष तृतीया का महत्त्व- निष्क्रमण सँस्कार के लिये शुक्ल पक्ष की तृतीया को चुनना बिलकुल शास्त्रीय बताया गया है । शास्त्रों में इस दिन को अभ्युदयारम्भ-सूचक बताया गया है । सांसारिक विकास को अभ्युदय कहते हैं । ध्यान दें तो दूज का चाँद तो कभी दिखता है कभी नहीं, ऐसे ही प्रथमा का चाँद है पर तृतीया का चाँद तो अपेक्षाकृत काफी मात्रा में दिखता है जो शुभारम्भ का सूचक है । चौथे मास में उसके जन्म तिथि को लिया जाना प्रसन्नता पूरक है । जन्म तिथि की खुशी भी इस समारोह में मिल जाने से यह और सुखकारी हो जाता है । पर ऐसा न हो सके तो यह भी कह दिया गया है कि जिस दिन मन भाये, उस दिन भी कर लें । मन की खुशी से बढ़कर और कोई खुशी नहीं हो सकती । अतः जब मन अच्छा महसूस करे, दिन खुला दिखे, हवा व प्रकाश संतुलित हो तो यह सँस्कार अवश्य कर लें । तीन-चार मास तक वच्चे का शरीर बाहरी जलवायु को सहन करने योग्य लगभग हो जाता है । इस कारण सँस्कार के लिये उपयुक्त काल उचित है ।

२. पत्नी का वार्यी ओर बैठना- इस सँस्कार में पत्नी अपने पति की वार्यी ओर ही बैठती है । यहाँ भी नामकरण की भाँति ही पत्नी वच्चे को लेकर उसे अपने पति के गोद में देती है । भावना वही है जो नामकरण में जतायी गयी है । पति-पत्नी मिलकर वच्चे के पालन-पोषण की पूरी जिम्मेवारी लेते हैं पर पहले पिता गोद में लेकर अनुभव करता है फिर उसे अपनी पत्नी को वापस कर उसकी जिम्मेवारी को अनुभव करने का अवसर देता है । इसके लिये पत्नी पहले पति से वचन लेकर फिर स्वयं वचन देती हुयी कहना चाहती है कि इस वच्चे के पालन-पोषण में सदैव पूरी साथ निभाऊँगी । ऐसा कहकर वह एक माता के दायित्व को पूरी तरह समझती है ।

३. दिन में सूर्य और रात में चन्द्र दर्शन करने का विधान- यह भी एक महत्त्वपूर्ण विधि है कि बाहर से जब लौटकर घर आवें तब रात्री में चन्द्र के भी दर्शन करें। सूर्य दर्शन से गर्मी की अनुभूति और चन्द्र दर्शन से शीतलता का ज्ञान कराना उद्देश्य है। दिन में क्रियाशील रह सब काम-काज करें और रात्री में शयन आदि द्वारा आराम करें, दिन और रात्री के कार्यों को सदा संतुलित रखें तभी जीवन प्रगतिशील, ऊर्जामय, नियन्त्रित और सुखमय सिद्ध हो सकेगा। यहाँ वच्चे के अन्दर सृष्टि-विज्ञान का संस्कार डालना भी उद्देश्य है। सूर्य और चन्द्रमा दोनों सृष्टि-विज्ञान को समझने में सदैव प्रमुख तत्त्व हैं। वस, इन्हीं कारणों से यह विधि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक है।

४. कान में मन्त्र पढ़ना- पारस्कर गृह्य सूत्र-१.१८.६ में केवल बालक के कान में मंत्र पढ़ने का विधान है पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बालक हो या बालिका, सबके कान में समानरूप से बिना किसी भेद-भाव के मंत्र-पाठ करने का विधान किया है। उस समय पति द्वारा पत्नी का सिर भी मौनरूप से स्पर्श करने का आदेश किया गया है। इस विधि द्वारा वच्चे में बिना किसी भेद-भाव बालक/बालिका दोनों को आध्यात्मिक, आस्तिक एवं वैदिक संस्कृति का संस्कार डालना है और साथ में स्त्री के सिर को स्पर्श कर उसके साथ प्रेम, सहयोग व अपनापन की अनुभूति करना है। इसी प्रकार सब संस्कारों में जाने कि सब संस्कार बालक हो या बालिका, दोनों के लिये सदा समान रूप से अनिवार्य है। दोनों को समान रूप से इस संसार में शिक्षित, दीक्षित और संस्कारित होने का अधिकार है। अतः हमें इसका ध्यान हमेशा रखना चाहिये।

५. आशीर्वाद - सब आगन्तुक स्त्री-पुरुष मिलकर वच्चे के दीर्घायुष्य व सुख विकास हेतु कुशल पुरोहित के नेतृत्व में अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दें। वह वच्चा प्रतिपल अन्दर-बाहर के सब व्यावहारिक गुणों को धारण करता हुआ बढ़ता रहे।

The 10 Principles of Arya Samaj

1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.
2. God is existent, formless and unchangeable. He is incomparable, omniscient, unborn, endless, just, pure, merciful, beginningless, omnipotent, the support and master of all, omnipresent, unageing, immortal, fearless, eternal, and holy, and the creator of the universe. To him alone is worship due.
3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is the paramount duty of all Aryas to read them, teach and recite them to others and hear them being read.
4. All persons should always be ready to accept the truth and to give up untruth.
5. All our actions should be according to the principles of Dharma, i.e. after differentiating right from wrong.
6. The primary aim of the Arya Samaj is to do good to the whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.
7. All ought to be treated with love, justice, and according to their merits as dictated by Dharma.
8. We should all promote knowledge (vidya) and dispel ignorance (avidya).
9. One should not be content with one's own welfare alone, but should look for one's welfare in the welfare of all.
10. In matters which affect the well-being of all people the individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority; in matters that affect him alone he is free to exercise his human rights

सातवाँ सँस्कार- अन्नप्राशन सँस्कार

आचार्य डॉ. उमेश यादव

अन्नप्राशन सँस्कार एक वैज्ञानिक सँस्कार है। यह वच्चे के शरीर विज्ञान पर आधारित है। जब वच्चा अन्न पचाने योग्य हो जाये तब अन्नप्राशन करें। आश्वलायन गृह्यसूत्र- १/१६/१,४,५ के अनुसार छठे मास में अन्नप्राशन करना लिखा है- षष्ठे मास्यन्नप्राशनम्-१, घृतौदनं तेजस्कामः-२, दधिमधुघृतमिश्रितमन्नं प्राशयेत्३ इनका क्रमशः इस प्रकार अर्थ है - अन्नप्राशन छठे मास में हो-१, घृत तथा भात तेजयुक्त होता है-२, दही, मधु और घृत मिश्रित अन्न उपयुक्त है -३। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि छठा मास न्यूनतम अवधि है। वैसे जब तक वच्चा माँ का दूध अनुकूलतापूर्वक ले; अच्छा है। अन्नप्राशन के बाद भी माँ का यथासम्भव दूध वच्चे के लिये लाभकारी है। लगभग एक वर्ष तक वच्चा दूध पर चलता है। दूसरे वर्ष में दूध तथा अन्न श्रेयस्कर है। पर कुछ वच्चे न्यूनतम छठे मास के बाद ही अन्न पचाने योग्य हो जाते हैं। ऐसे में थोड़ा-थोड़ा हल्का अन्न पक्व चावलादि देना उपयुक्त है ताकि आगे चलकर अन्न को वह शौक से खा सके। धीरे-धीरे अन्न बढ़ावें और दूध घटावें। दही, मधु और घृत को मिलाकर देने का अर्थ भी यही है कि वच्चा /वच्ची भिन्न-भिन्न पुष्टकारी खाद्य पदार्थों से परिचित हो जो इनके स्वास्थ्य के लिये भी हितकारी हो। उचित मात्रा में घृत और भात भी सुपाच्य पदार्थ है जो तेज भरने वाला है। जब वच्चा दाँत निकालने लगे तब उसे अन्न देना शुरू कर दें। विना दाँत का वच्चा माँ के दूध पर ही जीता है। यह बड़ा ही वैज्ञानिक है; प्राकृतिक है। तभी तो ईश्वर ने प्रारम्भ में ही माँ के स्तन में दूध दे दिया। ताकि संसार में आते ही वच्चा भोजन प सके।

जब वच्चे का दाँत आने लगा तो उसे संसार में अन्न भी मिल गया क्योंकि दाँत से वह अन्न चबा सकता है और अन्न को पचा भी सकता है । क्या ही अच्छा कहा गया-

जब दाँत न थे, तब दूध दियो,
जब दाँत दियो तब अन्न भी दें ।
काहे को सोच करै मन मूरख,
सभै को दिये सो तोको भी दें ।

इस प्रकार अन्नप्राशन एक अत्यन्त प्राकृतिक और वैज्ञानिक व्यवस्था है जो ईश्वर की व्यवस्था से सीधी जुड़ी हुयी है ।

विधिगत् विचार- अन्न प्राशन के लिये भोजन-अन्न निर्देशानुसार तैयार करें । आगे संस्कारानुसार विधिवत् यज्ञ-हवन करें । जब अन्न प्राशन का समय आये तब निम्न लिखित मंत्र को पढ़कर अन्न प्राशन करें अर्थात् वच्चे को तैयार किया हुआ भोजन थोड़ा-थोड़ा खिलावें ।

मंत्र- ओ३म् अनपतेऽन्नस्य नो देहयनमीवस्य शुष्मिणः । प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे-चतुष्पदे ॥ यजुर्वेद ११/८३ ।

इसका सामान्य अर्थ- हे अन्न के स्वामी परमात्मा, हमें रोगरहित शुद्ध पुष्टिकारक अन्न का सुख भाग प्राप्त करायें । प्रार्थना है कि आप अपनी कृपा से अन्न पैदा करने वाले किसान को आगे बढ़ावें और इस प्रकार सब मनुष्यों व सब प्राणियों समेत हमें उक्त अन्न की ऊर्जा-शक्ति उपयुक्त रूप से मिले । मनुष्योचित खाद्य पदार्थों को वैदिक शास्त्रों में अन्न कहा जाता है । यही शाकाहारी भोजन मान्य है -कहा गया है-" पयः पशूनां रसमौषधीनाम्" दूध, रस, औषधि युक्त भोजन अन्न कहलाता है जो

मनुष्य के लिये सदा हितकारी है । ध्यान देने योग्य बात है कि इस सँस्कार का नाम अन्न प्राशन रखा गया है, न कि माँस प्राशन या कोई अन्य । महर्षि दयानन्द ने यही माना है । वच्चे पर शुद्ध शाकाहारी भोजन का सँस्कार पड़े अतः प्रारम्भ से ही माता-पिता को चाहिये कि वे शुद्ध शाकाहारी भोजन का ही परिचय करायें । आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः - शुद्ध भोजन से शुद्ध वृद्धि का विकास होता है । हिन्दी में भी एक कहावत है- जैसा खाओ अन्न वैसा बने मन । अतः सात्विक, शुद्ध, प्रसन्न और सफल जीवन के लिये शुद्ध सात्विक आहार का सेवन नितान्त आवश्यक है । यही वैदिक उपदेश है ।

महावामदेव्यगान- यह एक निश्चित प्रक्रिया से व्यवस्थित मंत्रोच्चारण/ मंत्र-गान है जो वातावरण को अत्यन्त प्रिय, धार्मिक, तथा उत्तम सँस्कार-ग्रहणयुक्त बनाता है । यह गान सभी सँस्कारों में विधानित है । इससे सब उपस्थित जन सुनकर मंत्र-मुग्ध हो प्रसन्न होते हैं और फिर सभी मिलकर योग्य मान्य पुरोहित आचार्य के निर्देशन में वच्चे के सुखादि वृद्धि के लिये पवित्र व प्रसन्न हृदय से विधिवत् आशीर्वाद देते हैं -

इस सँस्कार में आशीर्वाद के लिये यह वाक्य प्रयुक्त है । “ त्वमन्नपतिरन्नादोवर्धमानो भूयाः ” अर्थात् हे बालक/बालिके, तुम अन्न के स्वामी बन, अन्न खाने वाला होकर सदा जीवन में बढ़ते रहो । यहाँ वच्चे को इस आशीर्वाद से सँस्कारित किया जा रहा है कि वह न केवल अन्न खाने वाला हो अपितु बढ़ा होकर अन्न का स्वामी भी बने । जो अन्न का स्वामी बनेगा, वही यथायोग्य दान भी करेगा अतः भाव है कि पुरुषार्थ से अन्न-धन कमाये, बाँटे, खाये और बढ़ता रहे । वैदिक सँस्कृति हमें यही सिखाती है ।

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org


Or

Call us on
0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays – Closed

Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)

- Matrimonial service charge - £90 for 12 months
- **Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together) Saturday 30th May 2015. Register NOW for a place! (See pages 18, 19 for detailed information and enclosed application form)**
- Please note that Arya Samaj Birmingham and Arya Samaj London are not linked. We both have our **OWN** Matrimonial list and all events are organized **separately**.
- Please note in every issue of Aryan Voice, if anyone that has a * asterisk at the end of there Job, **ONLY** wants to marry in there own caste. Eg

B4745 Hindu Brahmin Boy 26 5 ' 7" Chartered Accountancy* 

- All members' records have not been changed yet, as we are still waiting on caste forms, please keep checking this information every issue before you call.
- If you would like to add your caste to your record or state if you only want to marry in caste. Please e-mail or call us, so we can update your record.
- Everymonth in matrimonial list please check whole list, as members that have been deleted, may renew again months later and are being missed, as they take there place on the list depending on ref number order.
- Please inform us when your son or daughter is engaged or married, so we can remove their detail from the list.

VEDIC VIVAH MELA (Matrimonial Get Together)

2015

Date: Saturday 30th May 2015

Venue: Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells,
Birmingham B7 4SA (Road Map available on our Website)
www.arya-samaj.org

Time: 11.30am – 5pm

Cost: £25.00 per applicant. **NO GUESTS**

Buffet: Vegetarian meal included with soft drinks (no alcohol will be allowed or served)

How will it work?

We will have registration, welcome drink, light snacks and mingling.

Speed dating - Members will meet each other for a period of 3 to 4 minutes, during which you will be able to chat and find out about each other. (If you like the person, make a note of their ref number on the packs given on the day and we will send you there information by email). When the time is up, a bell will sound; you will change partner and repeat the process.

Once the speed dating is over, late lunch will be served and everyone is free to mingle some more before the end of the event.

We will explain the above and other details of the event on the day.

What you need to do now?

This Get-together is strictly for Arya samaj west Midlands registered matrimonial service candidates only. So if you are not registered as yet and wish to benefit from this event where you can meet personally a number of prospective partners hurry up and join. Forms are available on our website www.arya-samaj.org. Or tel. 0121 359 7727

This time we have decided to limit the number of participants, so please send your application forms well before the day of the event because it is first come first served basis. (Form can be found on website or by calling the office). **We would also like to have age groups 18-35 & 35-50, but this can only happen if you put your name down ASAP, if we feel there is not enough of your age group you will get a full refund.** For the smooth running of the event, all the information must be processed and the paper work completed for the participants on their arrival. Applications received after 25th May 2015, would not be entertained. But please do not wait till the last date. It might be too late.

Sorry at this event we are not allowing guest. If you bring someone with you on the day they will be refused entry.

Please send application forms and cheques made payable to 'Arya Samaj West Midlands. (**Applicants £25**) with a self addressed stamped envelope to Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells, Birmingham B7 4SA .You will be sent confirmation by post and email. You will have to bring this with you on the day or no entry will be allowed. Regrettably no entry will be available on the day, so please register in advance.. **If you come on the day without an entry confirmation it would be a wasted journey.**

So what are you waiting for? Look no further and think no further! Send in your application forms and cheque today!

We look forward to welcoming you to the event where you have the prospect of meeting that special SOMEONE!!

VICHAR GYAN PRAVAH

On

**Astha TV
Sky Channel 837**

At

**9.30pm
Every evening**

**20minutes talk
by a learned Vedic Scholar.**

List of Festivals for Year
2015

- **Rishi Bodh Utsav** **Sunday 22nd February**
- **Holi** **Sunday 8th March**
- **Ram Navmi** **Sunday 29th March**
- **Arya Samaj Foundation Day** **Sunday 12th April**
- **Annual General Meeting** **Sunday 26th July**
- **Indian Independence Day** **Sunday 16th August**
- **Raksha Bandhan** **Saturday 29th August**
- **Ved Katha (8 days)**
 Saturday 29th August to Saturday 5th September
- **Krishna Janmastmi** **Saturday 5th September**
- **Gayatri Maha Yajna** **Sunday 6th September**
- **Dussehra** **Sunday 25th October**
- **Diwali Celebration** **Saturday 14th November**

News

Condolence:

- **Mrs. Nimi Ghai and Mr. Parveen Ghai – for, loss of their son Mr. Chetan Kr. Ghai. Arya Samaj West Midlands prays to God to grant the departed souls the eternal peace and strength to every family-member to bear the loss.**

- **Mr. Chander Kant Prinja and family - For loss of Mother Mrs. Gargi Prinja (85) and also mother-in-law, Mrs. Sagli Devi (83)**
 - **It is with great sadness that we have to inform you that Mrs. Gargi Devi Prinja died on 2nd March 2015. Her immediate family members and grand children were with her in her last moments. Mrs. Gargi Prinja was a very valuable life member of Arya Samaj West Midlands. She played a very big role in financing to buy and furnish our present Arya Samaj Bhavan in 1995. Her younger son Mr. Chander Kant Prinja was the President of Arya Samaj when the present building was bought. Even after that she carried on with her regular attendance at Arya Samaj Bhavan congregations and functions. She continued with the regular donations to Arya Samaj West Midlands. She also attended the Day Centre activities of our Arya Samaj. Her demise is a big loss to our Arya Samaj. We pray to Almighty God to rest her soul in peace and give enough strength to her family members to bear her loss.**

 - **It is with great sadness that we have to inform you that Mrs. Sagli Devi Sharma, mother of our life member Mrs. Sushma Prinja and mother in law of Mr. Chander Kant Prinja, passed away on 3rd March 2015. With in 24 hours our ex President Mr. Chander Kant Prinja lost two mothers. We pray to Almighty God to give eternal peace to the departed soul. We also pray to God to give strength to the rest of the family members to bear this loss**

- **Mrs. Nirmala Joshi and family – for loss of her husband Mr. Rajni Raman Joshi. Arya Samaj West Midlands prays to God to grant the departed souls the eternal peace and strength to every family-member to bear the loss.**
- **Mr. Rajender Kumar (Coventry) and family – for loss of his wife Mrs. Krishna Kumari. Arya Samaj West Midlands prays to God to grant the departed souls the eternal peace and strength to every family-member to bear the loss.**

Prayers to God for Get-Well soon:

- **Mr. Satya Prakash Gupta and his wife Mrs. Sanju Gupta were injured in car accident on 11th March 2015. Mr. Gupta is a member of the Board of Trustees of Arya Samaj West Midlands and Mrs. Gupta is a very devoted Arya Samaji member of our Arya Samaj. Mrs. Gupta is recovering in a Hospital since this accident. We pray to Almighty God for their speedy recovery.**

Donations to Arya Samaj West Midlands

- **Mr. S.P. Gupta £101**

Donations to Arya Samaj through Priest Services.

- **Mrs. Komal Joshi - Havan in new house £51**
- **Mrs. Vinita Siman Hill - Havan in new house £31**
- **Mr. Vinay Kumar (Coventry) –
Shanti-havan & Pagari Rasam £101**
- **Mr Akshaya Joshi –
Shanti-havan & Pagari Rasam £150**

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 5th April 2015 & 3rd May 2015.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org